ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र’ : देवतापूजन – खण्ड ५

पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजनका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २०.९.२०२४ तक १२८ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर है ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ।।
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा । – जयंत बाळाजी आठवले
१५.५.१९९६

सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयोंपर गहन अध्यात्म-शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं। ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन्हें आसुरी शक्तियोंके आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

अनुक्रमणिका

अध्याय १ : देवतापूजनकी सर्वसामान्य जानकारी १४

१. व्याख्या १४

२. निर्मिति १४

३. महत्त्व १५

४. प्रकार १६

५. कुछ देवताओंके पूजनकी विशेषताएं तथा उनका शास्त्रीय आधार १६

६. देवतापूजन दिनमें कितनी बार और किस समय करें ? १८

७. देवतापूजन कब नहीं करना चाहिए ? १९

८. देवतापूजन किस दिशामें करना चाहिए ? २०

९. देवतापूजन किसे करना चाहिए ? २१

१०. देवतापूजन करते समय भाव कैसा रखें ? २३

११. देवतापूजनके कृत्यका शास्त्र समझना क्यों आवश्यक है ? २४

अध्याय २ : पंचोपचार पूजन – कृत्य एवं अध्यात्मशास्त्र २५

१. पंचोपचार पूजनका कृत्य २५

२. पंचोपचार पूजनके अन्तर्गत कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार ३२

३. पंचोपचारोंका तुलनात्मक महत्त्व तथा उनके परिणाम ७०

४. देवतापूजनमें गन्ध, पुष्प, धूप, दीप व नैवेद्य ये पांच उपचार होते हुए भी अक्षत क्यों चढाते हैं ? ७०

अध्याय ३ : षोडशोपचार पूजन – कृत्य तथा अध्यात्मशास्त्र ७२

१. षोडशोपचार पूजनका कृत्य ७२

२. षोडशोपचार पूजनके कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र ७८

३. षोडशोपचार तथा पंचोपचार पूजा ८७

४. षोडशोपचार पूजाके सोलह उपचारोंका तुलनात्मक महत्त्व, परिणाम तथा विशेषताएं ८९

अध्याय ४ : पूजनके उपरान्त किए जानेवाले कृत्य एवं उनका अध्यात्मशास्त्रीय आधार ९२

१. पूजनके उपरान्त किए जानेवाले कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार ९२

अध्याय ५ : अन्य जानकारी ९९

१. पूजाघरमें छोटे लोटेमें जल भरकर दूसरे दिन पीना चाहिए, यह सैद्धान्तिक रूपसे उचित होते हुए भी कलियुगके लिए अनुचित ९९

२. मानसपूजा ९९

३. देवतापूजनकी मर्यादा तथा शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए आगेके चरणकी साधना करना आवश्यक १०१

४. देवताओंका अनादर रोकना, कालानुसार आवश्यक देवताकी उपासना है ! १०२

भूमिका

‘देवतापूजन’ हिन्दू धर्मकी सगुण उपासनापद्धतिकी नींव है । ‘आजकलके तनावपूर्ण जीवनमें किसके पास देवतापूजनके लिए इतना समय है ?’, ऐसी नकारात्मक मानसिकता आज अनेक लोगोंमें दिखाई देती है । केवल एक नित्यकर्म निबटानेके लिए देवतापर हडबडीमें पानी उंडेलकर चन्दन लगाना, कोई भी फूल चढाकर उदबत्ती (अगरबत्ती) घुमाना और अन्तमें यह मान लेना कि इससे देवताकी पूजा हो गई । आज ऐसा चित्र दिखाई देता है । सम्पूर्ण सृष्टिका पालन-पोषण करनेवाले भगवानकी पूजाको इस प्रकार ‘निपटाना’ क्या वास्तवमें देवतापूजन कहा जा सकता है ? ऐसेमें भगवान भी हमपर भला क्यों कृपा करें ? जैसे हम घर आए अतिथिका स्वागत आदरपूर्वक करते हैं, उसी प्रकार यदि भगवानका करें अर्थात देवताकी विधिवत पूजा करें, तो ही वे हमपर प्रसन्न होकर हमें अनेकानेक आशीर्वाद देते हैं । इसीलिए धर्मशास्त्रमें देवताका आवाहन करना, उन्हें बैठनेके लिए आसन देना, चरण धोनेके लिए जल देना, इस प्रकार क्रमानुसार सोलह उपचारोंके माध्यमसे विधिवत भावपूर्ण धर्माचरण करना सिखाया गया है । १६ उपचारोंमेंसे - ९. चन्दन लगाना, १०. पुष्प चढाना, ११. धूप दिखाना, १२. दीपसे आरती उतारना तथा १३. नैवेद्य (भोग) निवेदित करना, इन पांच उपचारोंको ‘पंचोपचार’ कहते हैं । सोलह उपचारोंद्वारा देवताका पूजन करना सम्भव न हो, तो पंचोपचार पूजन करना भी उपयुक्त है । अधिकांश लोगोंके लिए षोडशोपचार पूजन करना सम्भव नहीं होता । इसलिए पाठकोंकी सुविधा हेतु प्रस्तुत ग्रन्थमें प्रथम पंचोपचार तत्पश्चात षोडशोपचार पूजनकी जानकारी दी है ।

हमारे त्रिकालदर्शी ऋषि-मुनियोंद्वारा बताए धर्मशास्त्रानुसार देवतापूजन करनेसे ही उनकी संकल्पशक्तिका लाभ मिलता है । देवतापूजन भक्तिभावसे करना भी महत्त्वपूर्ण है । देवतापूजनमें भगवानके प्रति प्रेम, भावकी आर्द्रता न हो, तो वह पूजा भगवानतक नहीं पहुंचती; क्योंकि भगवान भावके भूखे हैं । सामान्य श्रद्धालुमें शीघ्र भाव निर्माण होना कठिन

होता है; परन्तु देवतापूजनके विविध कृत्योंका शास्त्रीय आधार समझनेपर देवतापूजन तथा देवताके विषयमें भी श्रद्धा निर्माण होती है और उसका रूपान्तरण भावमें होता है । इसलिए प्रस्तुत ग्रन्थमें मुख्यतः देवतापूजनके कृत्योंका आधारभूत शास्त्र बतानेपर बल दिया है ।

देवताका आवाहन करते समय मूर्तिपर अक्षत अथवा तुलसी दल क्यों चढाते हैं, अर्घ्यमें जलके साथ चन्दन, पुष्प तथा अक्षत क्यों चढाते हैं, देवताके अभिषेकमें सुगन्धित द्रव्यका उपयोग क्यों करते हैं, देवताको प्रथम चन्दन तदुपरान्त हलदी-कुमकुम क्यों चढाते हैं, धूप दिखाते समय उसे हाथसे क्यों नहीं फैलाते, देवताके नैवेद्यकी थाली कैसे रखते हैं इत्यादि अनेक प्रश्नोंके बुद्धिसे परे शास्त्रीय उत्तर इस ग्रन्थमें दिए हैं । साथ ही किस देवताको कौनसा फूल चढाएं, देवताओंको विशिष्ट संख्या और रचनामें फूल चढानेका क्या शास्त्र है, देवताके सामने कितनी अगरबत्तियां जलाएं, ऐसे नवीनतम ज्ञानका भी इस ग्रन्थमें समावेश किया है ।

धार्मिक विधियोंमें इतनी शास्त्रोक्त गहनता हिन्दू धर्मके अतिरिक्त अन्य किसी भी पन्थमें नहीं है । इससे हिन्दू धर्मकी निर्विवाद श्रेष्ठता ज्ञात होती है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि ग्रन्थमें प्रस्तुत शास्त्रको समझकर उसके अनुसार सभी देवतापूजन भावपूर्णरीतिसे कर, अधिकाधिक ईश्वरीय कृपाप्रसाद का लाभ प्राप्त कर पाएं । – **संकलनकर्ता**

देवताओंके प्रति श्रद्धा दृढ करनेवाला सनातनका ग्रन्थ !

श्रीविष्णु

श्रीविष्णु अनेक श्रद्धालुओंके आस्थाकेन्द्र हैं । भावपूर्ण उपासना से ईश्वरकी अनुकम्पा शीघ्र होनेसे इस ग्रन्थमें श्रीविष्णुसे सम्बन्धित दुर्लभ एवं उपयुक्त ज्ञान दिया है ।